Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part I (Hons), Paper-2
Unit-4
Lecture series:-37

# Topic - Theory of social fact presented by ~~Emill~~ Emile Durkheim

दुर्खीम की पुस्तक 'The Rules of Sociological Method' वह महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें दुर्खीम ने सबसे पहले इन नियमों की विवेचना की जिनके द्वारा समाजशास्त्रीय अध्ययन को वैज्ञानिक बनाया जा सकता है। आरंभ में ही यह समझना आवश्यक है कि दुर्खीम द्वारा प्रस्तुत पद्धतिशास्त्र सामाजिक तथ्य की अवधारणा से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य को ही समाजशास्त्र के अध्ययन की वास्तविक विषय-वस्तु के रूप में स्वीकार किया है। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि सामाजिक तथ्य की प्रकृति को समझकर इसके अध्ययन से संबंधित प्रमुख नियमों को समझने का प्रयत्न किया जाय।

सामाजिक तथ्य को दुर्खीम ने एक ऐसी वस्तु (Thing) के रूप में स्वीकार किया है जो वैज्ञानिक अध्ययन का वास्तविक आधार है। केवल उसी विशेषता को हम वस्तु कह सकते हैं जिसका वास्तविक रूप से अवलोकन किया जा सकता है। केवल उसी विशेषता को इस दृष्टिकोण से सामाजिक तथ्य को परिभाषित करते हुए दुर्खीम ने लिखा है, "सामाजिक तथ्य व्यवहार करने का वह पक्ष है जिसका वस्तुनिष्ठ रूप से अवलोकन किया जा सकता है तथा जिसकी प्रकृति दबावकारी अथवा बाध्यतामूलक होती है।" इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक जीवन में हम विभिन्न प्रकार के ~~कि~~ विचारों, अनुभवों

Scanned with CamScanner

या क्रियाओं के रूप में ही व्यवहार करते हैं। उन्हें सामाजिक तथ्य केवल तभी कहा जा सकता है जब उनका वास्तविक रूप से अवलोकन किया जा सकता हो। इसी अर्थ में सामाजिक तथ्यों की प्रकृति 'वस्तु' की तरह होती है। दुर्खीम का मत है कि सामाजिक तथ्य वस्तु के समान मूर्त तथा स्पष्ट होते हैं। इस दृष्टिकोण से सामाजिक तथ्यों का अध्ययन उसी प्रकार किया जाना चाहिए जिस तरह प्राकृतिक विज्ञानी विभिन्न प्राकृतिक तथ्यों का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप से करते हैं। साथ ही यदि कोई विचार, अनुभव या क्रिया इसी तरह वैयक्तिक है तथा उसमें अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करने या उन पर दबाव डालने की क्षमता नहीं होती है तो उसे सामाजिक तथ्य नहीं कहा जा सकता। इस स्पष्ट करते हुए दुर्खीम ने पुनः लिखा है कि "सामाजिक तथ्यों में आचरण करने, विचार करने तथा अनुभव करने के उन सभी तरीकों का समावेश होता है जो व्यक्ति के लिए बाहरी होते हैं और जो अपनी दबाव शक्ति के द्वारा व्यक्ति को नियंत्रित करते हैं।

एक वस्तु के रूप में सामाजिक तथ्य की अवधारणा को दुर्खीम ने क्रम-विकास संबंधी आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट किया। इसके बाद दुर्खीम ने जब आत्महत्या संबंधी अध्ययन किया तब भी उन्होंने आत्महत्या को सामाजिक तथ्य के रूप में देखते हुए एक वस्तु के रूप में ही इसका अवलोकन किया। दुर्खीम ने यह भी स्पष्ट किया कि अध्ययन के आरंभ में सामाजिक तथ्यों का रूप बहुत अधिक स्पष्ट नहीं होता लेकिन सांख्यिकीय गणना की सहायता से विभिन्न सामाजिक तथ्यों को स्पष्ट रूप से देखकर उनके बीच एक स्पष्ट वर्गीकरण किया जा सकता है। सामाजिक तथ्य के रूप में दुर्खीम के विचारों को जानने के लिए आवश्यक है कि सामाजिक तथ्यों की विशेषताओं एवं उनके प्रकारों की विवेचना की जाए।

Scanned with CamScanner